हिन्दुस्तान 09-07-2016

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में पहली अंतर्राष्ट्रीय सिम्पोजियम आज, उत्पादन को लेकर विशेषज्ञों ने जताई चिंता

चीनी उद्योगों के लिए बाधा सरकारी बैरियर

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

सरकारी बैरियर के चलते चीनी उद्योग में भारत लगातार पिछड़ता जा रहा है। भ्रांतियों के चलते रिफाइन शुगर भारत में नहीं बन पा रही है। टेक्नोलॉजी होने के बावजूद भारत ग्लोबल प्लेयर नहीं बन पा रहा है। देश में मांग के सापेक्ष उत्पादन तक नहीं हो पा रहा है। अगर यही स्थिति रही तो देश में चीनी की कमी हो जाएगी। यह बातें राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में शनिवार को होने वाली पहली अंतर्राष्ट्रीय सिम्पोजियम की पूर्व संध्या पर ग्लोबल केन शुगर सर्विसेज के एमडी डॉ. सीएससी राव ने कही।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान पहुंचे यूनाइटेड किंगडम के शुगर नालेज इंटरनेशनल लिमिटेड के मैलकाम टाफर, क्वींसलैंड यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी आस्ट्रेलिया के रिसर्च फैलो डॉ. जान झांग, लंदन के इंटरनेशनल शुगर जनरल के संपादक ए चूडास्म, आडोबान शुगर इंस्टीट्यूट लुसियाना विश्वविद्यालय अमेरिका के माइकल सास्का और निदेशक प्रो.नरेंद्र मोहन ने बताया कि सिम्पोजियम में गन्ने की कई प्रजाति विकसित करने वाले डॉ. बख्शी का सम्मान किया जाएगा। बताया कि भारतीय चीनी के लिए उत्पादन के मुद्दे प्रमुख चुनौतियां हैं। किसानों के दामों को लेकर प्रदेशों में काफी भिन्नता है। कोई फार्मूला सार्थक नहीं हो रहा है। भारत लगातार चीनी उत्पादन में पिछड़ रहा है। देश में प्रतिवर्ष 50 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में गन्ना पैदा हो रहा है। इससे तीन हजार लाख टन गन्ना देश में प्रतिवर्ष पैदा हो रहा है। प्रति एकड़ उत्पादन काफी कम है। इससे रिफाइन शुगर का उत्पादन देश में न के बराबर हो रहा है।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में होने वाली पहली अंतर्राष्ट्रीय सिम्पोजियम की पूर्व संध्या पर जुटे शुगर विशेषज्ञ।

सेलुलोस से एथेनॉल उत्पादन पर जोर: केंद्र सरकार पेट्रोल में 22.50 फीसदी और डीजल में 15 फीसदी एथेनॉल मिलाने की तैयारी कर रही है। इसके लिए केंद्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी गंभीर है। इसके चलते शीरे के बजाए अन्य प्रोडक्ट से एथेनॉल बनाने पर जोर दिया जा रहा है। निदेशक प्रो.नरेंद्र मोहन ने बताया कि सेलुलोस के साथ ही बैम्बू और स्विच ग्रास से एथेनॉल बनाने की तैयारी चल रही है। अभी तकनीक महंगी है।

इसीलिए इसमें काफी काम हो रहा है। भारत में सेलुलोस एथेनॉल पर काशीपुर में काम हो रहा है। रिसर्च फैलो डॉ. जान झांग ने बताया कि सेलुलोस पर काफी काम हो रहा है। सस्ती टेक्नोलॉजी खोजी जा रही है।

चीनी उत्पादन पर एक नजर

284
लाख टन था बीते वर्ष उत्पादन

252
लाख टन था इस वर्ष उत्पादन

265
लाख टन हर वर्ष मांग देश में

थाईलैंड तेजी से बढ़ रहा

भारत की छोटी चीनी मिलों की तुलना में बड़ी चीनी मिलें लगाकर थाईलैंड तेजी से बढ़ रहा है। स्टेट सपोर्ट होने के चलते थाईलैंड एशिया का सबसे बड़ा एक्सपोर्टर बन गया है। वह सबसे ज्यादा रिफाइन शुगर बना रहा है। इससे उसको काफी फायदा मिल रहा है। अभी विश्व में सर्वाधिक 25 फीसदी चीनी ब्राजील और 15 फीसदी भारत पैदा कर रहा है।

यूपी में गन्ने की अच्छी फसल की संभावना

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में चल रहा पांच दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स शुक्रवार को खत्म हो गया है। इसमें आखिरी दिन डीएससीएल अजबापुर के प्रधान प्रबंधक केपी सिंह ने कहा कि उत्तर प्रदेश में इस वर्ष गन्ने की फसल अच्छी हुई है। इससे दो से तीन फीसदी की वृद्धि की उम्मीद है। कुशल प्रबंधन में रिकवरी की मात्रा बढ़ेगी। नई दिल्ली ग्लोबल केन शुगर लिमिटेड के तकनीकी सलाहकार मुकेश चौहान ने कार्यकुशल मूल्य प्रभावी मिलिंग तकनीकी के बारे में जानकारी दी। कहा कि कम उत्पादन लागत से गन्ने के रस को एक्सट्रैक्ट किया जा सकता है। यहां एके श्रीवास्तव, अरुलप्पन और डा. संतोष कुमार आदि मौजूद रहे।

सजेती में 3242 ट्रक मौरंग की होगी नीलामी

कानपुर। घाटमपुर के सजेती में किसानों की जमीन में अवैध रूप से रखी गई मौरंग की नीलामी करने का निर्णय लिया गया है। फिलहाल पड़ताल के बाद मौरंग की मात्रा 3242 ट्रक आंकी गई है। इसी हिसाब से नीलामी की दर भी निर्धारित की जाएगी। इससे राजस्व खाते में बिना किसी लागत के 1.80 करोड़ रुपए आएंगे।

अमर उजाला My City 09-07-2016

कार्यक्रम | राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में अंतरराष्ट्रीय सिम्पोजियम में शामिल होने पहुंचे विशेषज्ञ

बढ़ाना होगा रिफाइंड शुगर का उत्पादन

अमर उजाला ब्यूरो

कानपुर। विश्व में रिफाइंड शुगर (बिना सल्फर युक्त) का उत्पादन किया जा रहा है। इस दिशा में थाईलैंड, कीनिया जैसे अफ्रीकी देश तेजी से बढ़ रहे हैं। भारत में महज 14 रिफाइनरी हैं, जो रिफाइंड शुगर का उत्पादन कर रही हैं। इनकी संख्या यूपी में सिर्फ पांच है। इनके बढ़ने से आम आदमी को गुणवतायुक्त चीनी मिल सकेगी। ये जानकारी राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में पहले अंतरराष्ट्रीय सिम्पोजियम में आए शुगर विशेषज्ञों ने दी।

शुगर नॉलिज टेक्नोलॉजी इंटरनेशनल लिमिटेड यूके के मैल्कम टॉफर ने कहा कि भारत की शुगर इंडस्ट्री में बेशुमार अवसर हैं। आधुनिक तकनीक अपना कर शुगर का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। अभी भी यहां उत्पादित शुगर का बड़ा हिस्सा अन्य उद्योग की जरूरतों को पूरा करने में चला जाता है। इस कारण यहां पर डिमांड और सप्लाई में बड़ा अंतर हैं। इस कारण शुगर की कीमत भी ज्यादा है। हालांकि देश में वित्तीय वर्ष 2016-17 में 255 लाख टन से अधिक शुगर का उत्पादन हुआ है। यह मांग के अनुरूप 250 टन है। इसमें और बढ़ोतरी की आवश्यकता है।

इंटरनेशनल शुगर जरनल यूके के एडिटर ए छुदासामा ने कहा कि भारत में गन्ना एक राजनीतिक फसल बन गई है। सरकारी बैरियर के कारण ही तमाम संसाधन होने के बावजूद देश शुगर इंडस्ट्री में पिछड़ रहा है। केंद्र, राज्य सरकार, चीनी मिलों और किसानों में सामंजस्य नहीं है। यही कारण है कि देश में गन्ना का प्रति हेक्टेअर उत्पादन कम हो रहा है। क्वींसलैंड यूनिवर्सिटी आफ टेक्नोलॉजी आस्ट्रेलिया के रिसर्च फैलो डा. जान झांग ने कहा कि भविष्य में शीरे (मोलास) एथेनॉल की उपलब्धता में कमी होगी। संस्थान के निदेशक डा. नरेंद्र मोहन ने बताया कि भविष्य में सेल्यूलोज (गन्ने की खोई, बैम्बू और स्विच ग्रास) से एथेनॉल बनाया जा सकेगा। इस पर काशीपुर उत्तराखंड में पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर काम शुरू किया गया है। ऑडोबॉन सुगर इंस्टीट्यूट, यूनीवर्सिटी ऑफ लुसियाना, अमेरिका के पूर्व प्रोफेसर माइकल सास्का ने कहा कि शुगर को ग्लोबल इकोनॉमी से जोड़ने के लिए कई सुधार करने पड़ेंगे।

आज होगा इंटरनेशनल सिम्पोजियम

संस्थान के निदेशक डॉ. नरेंद्र मोहन ने बताया कि शनिवार को सिम्पोजियम का विषय 'चीनी क्षेत्र में जैव अर्थव्यवस्था में अवसर और चुनौतियों' पर विशेषज्ञ अपनी राय रखेंगे। इसके अलावा शुगर केन रिसर्च इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर डा. बख्शीराम को सम्मानित किया जाएगा।

एनएसआई में आयोजित पत्रकारवार्ता में जानकारी देते निदेशक डॉ. नरेंद्र मोहन, डॉ. जीएस राव, मैल्कम टाफेर, डॉ. ए छुदासामा, माइकल शास्का, डॉ. जान झांग।

अंतरराष्ट्रीय शुगर विशेषज्ञों ने कहा कि यहां शुगर इंडस्ट्री में बेशुमार मौके

गन्ना बनी राजनीतिक फसल इस लिए पिछड़े

घट रहा चीनी का उत्पादन

ग्लोबल केन शुगर लिमिटेड के एमडी जीएससी राव ने बताया कि देश में शुगर उत्पादन पिछले वर्षों की तुलना 2010-11 के मुकाबले घटी है। इसका कारण गन्ना उत्पादन में कमी होना है।

घटेगी इथेनॉल की उपलब्धता

डा. नरेंद्र मोहन ने बताया कि पेट्रोल में 22.5 फीसदी और डीजल में 15 फीसदी एथेनॉल मिश्रित करने की घोषणा केंद्र सरकार ने की है। ऐसा होने से शीरे से बनने वाले एथेनॉल की उपलब्धता घटेगी।

अधिक क्षमता वाली हों मिल

ऑडोबॉन शुगर इंस्टीट्यूट, यूनीवर्सिटी ऑफ लुसियाना, अमेरिका के पूर्व प्रोफेसर माइक ल सास्का ने कहा कि थाईलैंड की तरह भारत में भी अधिक क्षमता वाली मिल लगाई जाए।

कुशन प्रबंधन से बढ़ेगी रिकवरी

एनएसआई में चल रहे रिफ्रेशर कोर्स में डीएससीएल अजबापुर के एमडी केपी सिंह ने कहा कि गन्ने की फसल के कुशल प्रबंधन से गन्ने की (परता) रिकवरी ज्यादा की जा सकती है। किसानों को जागरूक होना पड़ेगा।

I

दैनिक जागरण 09-07-2016

पेट्रोलियम पदार्थ हो सकते और सस्ते

कम लागत में एथेनॉल बनाने के शोध में मिले सकारात्मक परिणाम

कानपुर, जागरण संवाददाता : सब कुछ ठीक-ठाक रहा तो आने वाले समय में पेट्रोल समेत दस पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतें कम हो जाएंगी। इनमें मिलाए जाने वाले एथेनॉल को सरल और कम लागत में तैयार करने पर शोध किया जा रहा है। इसके सकारात्मक परिणाम भी सामने आए हैं। क्वींसलैंड यूनिवर्सिटी आफ टेक्नोलाजी आस्ट्रेलिया के रिसर्च फेलो डॉ. जान झांग का कहना है कि जल्द ही भारत समेत सभी देशों को सस्ता एथेनॉल मिलने लगेगा। डॉ. झांग राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) में शुक्रवार से होने वाली अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेने आए है।

एनएसआई में पहली बार अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की जा रही है जिसमें शुगर नालेज इंटरनेशनल लिमिटेड यूनाइटेड किंगडम से मैलकाम टाफर, आडोबान शुगर इंस्टीट्यूट लुसियाना विश्वविद्यालय अमेरिका के सेवानिवृत्त प्रोफेसर माइकल सास्का, इंटरनेशनल शुगर जनरल लंदन के संपादक ए चूडास्मा व क्वींसलैंड यूनिवर्सिटी आफ टेक्नोलाजी आस्ट्रेलिया के रिसर्च फेलो डा. जान झांग भाग लेने को पहुंचे हैं।

शुक्रवार को हुई प्रेसवार्ता के दौरान डा. झांग ने बताया कि अभी तक शक्कर के शीरे से एथेनॉल बनाया जाता है जो बहुत महंगा पड़ता है। अभी एथेनॉल बनाने की जो प्रक्रिया है वह इसलिए इतनी महंगी है क्योंकि एथेनॉल से पहले ग्लूकोज बनाया जाता है। अधिकांश खर्च ग्लूकोज बनाने की प्रक्रिया में होता है।

अगर यह प्रक्रिया सस्ती हो जाए तो एथेनॉल भी सस्ता हो जाएगा। सेल्यूलोज एक ऐसा कंटेंट है जो प्लांट में उपलब्ध रहता है। इसे ब्रेकडाउन करके ग्लूको में परिवर्तित किया जाता है। इस दौरान यह भी बताया गया कि रिफाइंड शुगर का उत्पादन बढ़ाने की जरूरत है अभी हम यह दूसरे देशों से खरीद रहे हैं। वार्ता में निदेशक प्रो.नरेंद्र मोहन, असिस्टेंट प्रोफेसर संतोष कुमार आदि मौजूद थे।

एनएसआई में पत्रकारों से वार्ता करते डा.मेलकम टाफर साथ में ए.चूडास्मा, डा.जान झांग व मेलकाम सास्का। जागरण

पेट्रोल में साढ़े 12 फीसद एथेनॉल मिलाने का लक्ष्य

प्रेसवार्ता में निदेशक प्रो. मोहन ने बताया कि अभी पेट्रोल में पांच फीसद एथेनॉल मिलाया जा रहा है जबकि लक्ष्य साढ़े 12 फीसद मिलाने का है। वर्तमान समय में भारत में वर्ष भर में 134 करोड़ लीटर एथेनॉल का उत्पादन हो रहा है जबकि जरूरत इससे कहीं अधिक की है। आने वाले समय में इसकी जरूरत तीन गुनी से ज्यादा बढ़ जाएगी।

अमर उजाला 09-07-2016

बढ़ाना होगा रिफाइंड शुगर का उत्पादन

अंतरराष्ट्रीय सिम्पोजियम में विशेषज्ञों ने रखे विचार

कानपुर। विश्व में रिफाइंड शुगर (बिना सल्फर युक्त) का उत्पादन किया जा रहा है। इस दिशा में थाईलैंड, कीनिया जैसे अफ्रीकी देश तेजी से बढ़ रहे हैं। भारत में महज 14 रिफाइनरी हैं, जो रिफाइंड शुगर का उत्पादन कर रही हैं। इनकी संख्या यूपी में सिर्फ पांच है। इनके बढ़ने से आम आदमी को गुणवत्तायुक्त चीनी मिल सकेगी। ये जानकारी राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में शनिवार को होने वाले पहले अंतरराष्ट्रीय सिम्पोजियम में शुगर विशेषज्ञों ने दी।

शुगर नॉलेज टेक्नोलॉजी इंटरनेशनल लिमिटेड यूके के मैल्कम टॉफर ने कहा कि भारत की शुगर इंडस्ट्री में बेशुमार अवसर हैं। आधुनिक तकनीक अपना कर शुगर का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। अभी भी यहां उत्पादित शुगर का बड़ा हिस्सा अन्य उद्योग की जरूरतों को पूरा करने में चला जाता है। इस कारण यहां पर डिमांड और सप्लाई में बड़ा अंतर हैं। इस कारण शुगर की कीमत भी ज्यादा है। हालांकि देश में वित्तीय वर्ष 2016-17 में 255 लाख टन से अधिक शुगर का उत्पादन हुआ है। यह मांग के अनुरूप 250 टन है। इसमें और बढ़ोतरी की आवश्यकता है।

इंटरनेशनल शुगर जर्नल यूके के एडिटर ए छुदास्का ने कहा कि भारत में गन्ना एक राजनीतिक फसल बन गई है। केंद्र, राज्य सरकार, चीनी

मिलों और किसानों में सामंजस्य नहीं है। यही कारण है कि देश में गन्ना का प्रति हेक्टेअर उत्पादन कम हो रहा है। क्वीन्सलैंड यूनिवर्सिटी आफ टेक्नोलॉजी आस्ट्रेलिया के रिसर्च फैलो डा. जान झांग ने कहा कि भविष्य में शीरे (मोलास) एथेनॉल की उपलब्धता में कमी होगी। संस्थान के निदेशक डा. नरेंद्र मोहन ने बताया कि भविष्य में सेल्यूलोज (गन्ने की खोई, बैम्बू और स्विच ग्रास) से एथेनॉल बनाया जा सकेगा। इस पर काशीपुर उत्तराखंड में पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर काम शुरू किया गया है। ऑडोबॉन शुगर इंस्टीट्यूट, यूनीवर्सिटी ऑफ लुसियाना, अमेरिका के पूर्व प्रोफेसर माइक ल सास्का ने कहा कि शुगर को ग्लोबल इकोनॉमी से जोड़ने के लिए कई सुधार करने पड़ेंगे।

देश में घट रहा चीनी का उत्पादन

ग्लोबल केन शुगर लिमिटेड के एमडी जीएससी राव ने बताया कि देश में शुगर उत्पादन पिछले वर्षों की तुलना 2010-11 के मुकाबले घट रहा है। इसका कारण गन्ना उत्पादन में कमी होना है।

एथेनॉल की उपलब्धता घटेगी

संस्थान के निदेशक डा. नरेंद्र मोहन ने बताया कि केंद्र सरकार की नई घोषणा कि पेट्रोल में 22.5 फीसदी एथेनॉल और डीजल में 15 फीसदी एथेनॉल मिश्रित करने के लिए कहा है। ऐसा होने से शीरे से बनने वाले एथेनॉल की उपलब्धता घटेगी।

मांग-आपूर्ति में अंतर

ऑडोबॉन शुगर इंस्टीट्यूट, यूनीवर्सिटी ऑफ लुसियाना, अमेरिका के पूर्व प्रोफेसर माइकल सास्का ने कहा कि शुगर उत्पादन में भारत ब्राजील के बाद दूसरे स्थान पर है। लेकिन अब भी यहां डिमांड-सप्लाई में अंतर है। थाईलैंड जैसे देश शुगर उत्पादन में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं।

महंगाई गन्ने का उत्पादन कम होने से महंगी होगी चीनी

इस साल चीनी भी काटेगी पब्लिक की जेब

» सूखे की वजह से 15 लाख टन कम होगा गन्ने का प्रोडक्शन

kanpur@inext.co.in

KANPUR (8 July): आने वाले समय में चीनी की 'मिठास' कम हो जाएगी. इसका असर आपकी जेब पर भी पड़ेगा. देश में इस बार चीनी का उत्पादन कम होने की वजह चीनी महंगी होने के पूरे आसार हैं. पिछले वर्ष की तुलना में इस बार गन्ने का उत्पादन करीब 15 लाख टन कम होगा. नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि अगले महीने से उत्पादन की कमी का असर बाजार में दिखने लगेगा. प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि इस वर्ष सूखे की वजह से गन्ने का उत्पादन कम हुआ है. पिछले 6 महीने में चीनी की कीमत 35 रुपए प्रति किलोग्राम से 38 रुपए प्रति किलोग्राम तक पहुंच चुका है, लेकिन गन्ने के उत्पादन में कमी की वजह से चीनी के रेट बढ़कर करीब 40 रुपए से ऊपर जाने के पूरे आसार हैं.

50 लाख हेक्टेयर में उत्पादन

प्रो. नरेंद्र मोहन के मुताबिक देश में 50 लाख हेक्टेयर जमीन में गन्ने का उत्पादन किया जा रहा है. एक हेक्टेयर में 60 लाख टन गन्ने का

उत्पादन होता है. लेकिन इस बार ये उत्पादन कम हुआ है. इस वक्त मिलों में चीनी तैयार हो रही है लेकिन बाजार की मांग से चीनी कम उपलब्ध होगी. प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि कोलंबिया में सबसे ज्यादा एक हेक्टेयर में 129 लाख टन गन्ने का उत्पादन होता है. वहां गन्ने की फसल का 75 परसेंट शुगर मिल में खपत होता है और 25 परसेंट गुड़ व अन्य चीजें बनाने में यूज किया जाता है. देश में बीते पांच साल में शुगर का प्रोडक्शन डिमांड से ज्यादा हुआ है, लेकिन इस बार प्रोडक्शन गिरेगा, इसकी वजह सूखा जो पड़ा था और गन्ना कम पैदा हुआ है.

NSI में इंटरनेशनल सेमिनार

एनएसआई डायरेक्टर प्रो. नरेन्द्र मोहन ने बताया कि देश में 529 शुगर इंडस्ट्री चल रही हैं. करीब 14 शुगर इंडस्ट्री में रिफाइंड शुगर बन रही है. जिसमें कि चार इंडस्ट्री रॉ शुगर से रिफाइंड शुगर का प्रोडक्शन कर रही है. एनएसआई में फर्स्ट टाइम इंटरनेशनल सेमिनार शनिवार को आयोजित किया जा रहा है, जिसमें कि यूके व यूएसए व ऑस्ट्रेलिया के एक्सपर्ट अलग अलग टॉपिक पर जानकारी देंगे. पेट्रोलियम प्रोडक्ट में एथेनॉल मिलाने का जो टारगेट रखा गया था. वह भी पूरा नहीं हो पा रहा है. शीरे से एथेनॉल पूरा नही किया जा सकता है. अब ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर नितिन गडकरी ने साफ कहा कि पेट्रोल में 22.5 और डीजल में 15 परसेंट एथेनॉल मिलाया जाए. ऐसे में सेल्युलोस से एथेनॉल का प्रोडक्शन करना होगा, जिस पर अभी काफी काम करना होगा तभी एथेनॉल की मांग को पूरा किया जा सकता है.

पिछले 6 महीने में चीनी की कीमत 35 रुपए प्रति किलोग्राम से बढ़कर 38 रुपए प्रति किलोग्राम तक पहुंच चुकी है.

इंडिया है दूसरे नंबर पर

उन्होंने बताया कि चीनी प्रोडक्शन में ब्राजील नंबर एक पर है. वह दुनिया की कुल खपत का 25 परसेंट चीनी का उत्पादन करता है, दूसरे नंबर पर इंडिया है जो 15 परसेंट कर रहा है. एनएसआई में शुरू हो रहे इंटरनेशनल सिंपोजियम में हिस्सा लेने के लिए कानपुर पहुंचे इंटरनेशनल शुगर जनरल के एडिटर ए. चुडास्मा ने बताया कि इंडिया में रिफाइंड शुगर के लिए टेक्निकल बैरियर नहीं है.